आय से आप क्या समझते हैं ?

आय वह मापदंड है, जिसके द्वारा देश के आर्थिक विकास की स्थिति का आकलन किया जाता है। किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए उसके नागरिको की व्यक्तिगत अथवा सामाजिक आय उस देश की सम्पन्नता या गरीबी की पहचान है। इसे प्रति व्यक्ति आय या राष्ट्रीय आय के रूप में मापा जाता है।

सकल घरेलू उत्पाद से आप क्या समझते हैं ?

सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product या G.D.P.) एक विशिष्ट समय अवधि में देश के भीतर उत्पादित सभी तैयार वस्तुओं और सेवाओं का मौद्रिक मूल्य है। सकल घरेलू उत्पाद देश की अर्थव्यवस्था को मापने का सबसे अच्छा तरीका है। जीडीपी देश में सभी लोगों और कंपनियों द्वारा उत्पादित सभी चीजों का कुल मूल्य है। जीडीपी में सभी निजी और सार्वजनिक खपत, निवेश, सरकारी परिव्यय, निजी सूची, भुगतान-निर्माण लागत और व्यापार का विदेशी संतुलन शामिल है। सीधे शब्दों में कहें, तो जीडीपी एक देश की समग्र आर्थिक गतिविधि का एक व्यापक माप है।

प्रति - व्यक्ति आय क्या है ?

प्रति-व्यक्ति आय को ज्ञात करने के लिए देश की राष्ट्रीय आय में उस देश की कुल जनसंख्या से भाग दिया जाता है, जो भागफल आता है उसी को प्रति-व्यक्ति आय कहते हैं।

$$\text{प्रति - व्यक्ति आय} = \frac{\text{राष्ट्रीय आय}}{\text{देश की कुल जनसंख्या}}$$

भारत में सर्वप्रथम राष्ट्रीय आय की गणना कब और किनके द्वारा की गई थी ?

भारत में सर्वप्रथम राष्ट्रीय आय की गणना सन् 1868 में दादा भाई नौरोजी द्वारा की गई थी। उन्होंने अपनी पुस्तक 'Poverty and Un-British Rule in India' में बताया था कि भारत में प्रति - व्यक्ति वार्षिक आय 20 रुपए है।

भारत में राष्ट्रीय आय की गणना किस संस्था द्वारा होती है ?

भारत में राष्ट्रीय आय की गणना केन्द्रीय सांख्यिकीय द्वारा होती है। इस संस्था की स्थापना 1954 के बाद केन्द्रीय सरकार द्वारा राष्ट्रीय आय के आँकड़ों के संकलन करने के लिए किया गया था।

राष्ट्रीय आय की गणना में होने वाली कठिनाइयों का वर्णन करें।

राष्ट्रीय आय की गणना करने में अनेक तरह की व्यावहारिक कठिनाईयां है, जिनके प्रमुख बिन्दु निम्नलिखित हैं –

• ऑकड़ों को एकत्र करने में कठिनाई होती है, क्योंकि आकड़ें सही नहीं हो तो देश के विकास की सही स्थिति प्राप्त नहीं हो पाएगी।

• दोहरी गणना की आशंका रहती है, क्योंकि कभी कभी एक ही आय को गलती से दो बार जोड़ दिया जाता है।

• मूल्य को मापने में कठिनाई भी होती हैं। किसी उत्पाद का मुल्य कितना हो यह निश्चित करना कठिन होता है।

आय का गरीबी के साथ संबंध स्थापित करें?

गरीबी का आय के साथ व्युत्क्रमानुपाती सम्बंध है।अगर किसी व्यक्ति की आय बहुत अधिक होती है तो वह व्यक्ति गरीब नहीं होता परंतु अगर किसी व्यक्ति की आय बहुत कम होती है तो वह व्यक्ति गरीब होता है।

अर्थात जितनी ज़्यादा आय उतना कम गरीब व्यक्ति और जितनी कम आय उतना अधिक गरीब व्यक्ति। यही कारण है की आय और गरीबी के मध्य व्युत्क्रमानुपाती सम्बंध है क्योंकि जितनी आय बढ़ेगी उतनी गरीबी घटेगी और जितनी आय घटेगी उतनी गरीबी बढ़ेगी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत सरकार ने कब और किस उद्देश्य से राष्ट्रीय आय समिति का गठन किया ?

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत सरकार ने आय की गणना के लिए गंभीरतापूर्वक प्रयास किया इसी उद्देश्य से भारत सरकार ने अगस्त 1949 में प्रो० पी० सी० महालनोबिस की अध्यक्षता में 'राष्ट्रीय आय समिति' (NIC) का गठन किया गया। इस समिति के गठन का उद्देश्य भारत की राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाना था।

राष्ट्रीय आय समिति ने अपना पहला रिर्पोट 1951 में प्रस्तुत किया। इसमें सन् 1948 - 49 के लिए देश की कुल आय 8, 650 करोड़ रुपए बताई गई। इस आकलन में भारत में प्रति - व्यक्ति आय 246.9 रुपए थी। सन् 1954 में सरकार ने राष्ट्रीय आय के आँकड़ों के संकलन का भार केन्द्रीय सांखिकीय संगठन के ऊपर लगा दिया। इस संगठन की स्थापना भी भारत सरकार ने ही की थी। यह संगठन अब प्रत्येक आर्थिक वर्ष के लिए राष्ट्रीय आय के आँकड़े प्रकाशित करती है।

राष्ट्रीय आय की परिभाषा दें। इसकी गणना की प्रमुख विधियाँ कौन - कौन - सी है ?

देश की सम्पूर्ण श्रम शक्ति तथा पूँजी के सहयोग तथा देश में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके जो भौतिक तथा अभौतिक उत्पादन होता है, उसके मौद्रिक रूप में व्यक्त मूल्य को राष्ट्रीय आय कहते हैं।

राष्ट्रीय आय की गणना की प्रमुख विधियाँ निम्नलिखित हैं –

• **आय गणना विधि -** आय गणना विधि के अंतर्गत कुल लगान कुल मजदूरी आदि को सम्मिलित करते हैं यानी विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों के वेतन आदि के रूप में प्राप्त आय को सम्मिलित करते हैं।

• **उत्पादन गणना विधि -** उत्पादन गणना विधि को वस्तु सेवा विधि भी कहते हैं। इस विधि के द्वारा एक वर्ष में उत्पादित वस्तुओं तथा सेवाओं के कुल मूल्य को सम्मिलित करते हैं। इस विधि के अंतर्गत उत्पादन, खनन, मत्स्य उद्योग, कृषि, पशुपालन और वानिकी को सम्मिलित करते हैं। यानी इसके अंतर्गत वित्तीय क्षेत्र को सम्मिलित करते हैं।

• **व्यय गणना विधि -** इस विधि को उपभोग बचत विधि भी कहा जाता है इस विधि में कुल उपभोग और कुल बचत को सम्मिलित करते हैं।

Note - विकासशील देशों में राष्ट्रीय आय के अनुमान का सर्वश्रेष्ठ विधि आय गणना विधि है। क्योंकि कृषि क्षेत्र से कम आय की प्राप्ति होती है। निगम क्षेत्र से अधिक आय की प्राप्ति होने के कारण इस विधि का उपयोग किया जाता है। जबकि भारत जैसे विकासशील देशों में आय गणना और उत्पादन गणना विधि दोनों का उपयोग किया जाता है। तीनों विधियों में सबसे उपयुक्त आय गणना विधि है। इसी विधि का सर्वाधिक उपयोग किया जाता है।

प्रति- व्यक्ति आय और राष्ट्रीय आय में अंतर स्पष्ट करें।

देश की सम्पूर्ण श्रम शक्ति तथा पूँजी के सहयोग तथा देश में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके जो भौतिक तथा अभौतिक उत्पादन होता है उसके मौद्रिक रूप में व्यक्त मूल्य को राष्ट्रीय आय कहते हैं। जबकि प्रति - व्यक्ति आय राष्ट्रीय आय का एक भाग है, वहीं राष्ट्रीय आय पुरे देश की कुल आय का योग है। राष्ट्रीय आय में देश की कुल जनसंख्या से भाग देने से जो भागफल आता है वहीं प्रति - व्यक्ति आय कहलाता है। इसके आकलन का तरीका निम्नांकित है :-

$$\text{प्रति - व्यक्ति आय} = \frac{\text{राष्ट्रीय आय}}{\text{देश की कुल जनसंख्या}}$$

राष्ट्रीय आय में वृद्धि भारतीय विकास के लिए किस तरह से लाभप्रद है ? वर्णन करें।

किसी भी देश की राष्ट्रीय आय उस देश के विकास में लाभप्रद होती है। यहीं बात भारत पर भी लागू होती है। भारत में लोगों की आय बढ़ने से ही देश की राष्ट्रीय आय बढ़ सकती है। राष्ट्रीय आय बढ़ने से ही देश का विकास संभव है। फलतः शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पूंजी का निवेश हो सकेगा। इससे नए - नए रोजगारों का भी सृजन सम्भव हो सकेगा। इसका प्रभाव प्रति - व्यक्ति आय पर पड़ेगा, जिसमें राष्ट्रीय आय भी बढ़ेगी। अधिक से अधिक वस्तुओं का उत्पादन बढाकर ही व्यक्तियों की आय बढ़ाई जा सकती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि उत्पादन को और अधिक बढ़ाकर ही हम देश को उच्चतम विकास की स्थिति तक पहुंचा सकते हैं।

विकास में प्रति-व्यक्ति आय पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

प्रति - व्यक्ति आय किसी भी देश के विकास की मूल जड़ है। प्रति - व्यक्ति आय बढ़ने पर राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है। राष्ट्रीय आय में वृद्धि होने पर कोई देश अपना विकास कर सकता है। राष्ट्रीय आय और प्रति- व्यक्ति आय दोनों में निकट का सम्बन्ध है। प्रति-व्यक्ति आय के बढ़े बिना राष्ट्रीय आय में वृद्धि नहीं हो सकती। राष्ट्रीय आय की वृद्धि से ही देश का विकास हो सकेगा। इस प्रकार स्पष्ट है कि राष्ट्रीय आय के सूचकांक में जब वृद्धि होती है तो निश्चित रूप से लोगों के आर्थिक विकास में वृद्धि होगी। अतः देश के विकास में प्रति - व्यक्ति आय का काफी महत्व है।

क्या प्रति - व्यक्ति आय में वृद्धि राष्ट्रीय आय को प्रभावित करती है ? वर्णन करें।

हाँ, प्रति-व्यक्ति आय में वृद्धि राष्ट्रीय आय को प्रभावित करती है। राष्ट्रीय आय देश के प्रति व्यक्ति आय से ही प्राप्त होती है। जिस देश में प्रति- व्यक्ति आय जितना ही अधिक होती है, उस देश को उतना ही अधिक विकसित माना जाता है। इन बातों से स्पष्ट होता है कि प्रति - व्यक्ति आय में वृद्धि ही राष्ट्रीय आय को प्रभावित करती है। अतः, जिस देश की राष्ट्रीय आय जितना ही अधिक होगी, उस देश की प्रति - व्यक्ति आय भी उतना ही अधिक होगी। अतः हम कह सकते हैं कि प्रति - व्यक्ति आय में वृद्धि राष्ट्रीय आय को प्रभावित करती है।